आभासी दुनिया

जिंदगी तरसती है
दो पल बातों के लिए
माना तुम्हारे अपने
भले ही चला रहे हो वाट्सअप
मेहमान नवाजी पर ध्यान कहाँ ?
खत- पट होती रोज पति पत्नी में
पत्नी जरा छोड़े मोबाइल
तो कोई काम बने।
तुम्हे भी छोड़ना होगा मोबाइल
कोई काम की सुध नहीं
बिना नहाए
बैठे रहे घंटों
तारीफों के पुल
बांधते रहने का
मानों लिया हो जैसे ठेका।
हाजिर हो रहे हो
जैसे होता अर्दली
या जिन्न पाल लिया हो
गुड मॉर्निंग ,गुड आफ्टरनून, गुड नाईट
बोलना अनिवार्य
नहीं तो दोस्ती टूटी
ये तो वैसा ही लगता जैसे
सांप घर सांप पावणा
बस जीप की लपालपी।
कुछ कम करो
बेजान सी आभासी बातें
हकीकत में जब होंगे
आमने -सामने तो
प्रत्यक्ष को प्रमाण की
आवश्यकता न होगी
आभासी दुनिया से बाहर की
दुनिया भी होती थी कभी
जिसमे मिला था सुकून।

संजय वर्मा 'दृष्टि'
125 बलिदानी भगत सिंह मार्ग
मनावर जिला धार मप्र

द्वंद्व के उस पार – कहती है 'वीणा'

मैंने सीखा ही नहीं
चेहरे पर चेहरा चढ़ाना,
आत्मा के आईने में
खुद को धुंधला कर पाना।
मेरे भीतर का मन
अब भी उतना ही निर्मल है,

जितना किसी निर्झर का जल–
पर इस निर्मलता का मूल्य
अक्सर एकांत में चुकाना पड़ता है।
जहाँ शब्दों से अधिक

मुस्कानों में कपट छिपा हो,
जहाँ अपनापन भी
स्वार्थ की शर्तों पर टिका हो–
वहाँ मेरा सीधापन

एक असहज प्रश्न बन जाता है।
लोग कहते हैं–
'थोड़ा बदल जाओ,
समय के साथ ढल जाओ... '
पर कहती है 'वीणा '–
जो बदल जाए वो मैं नहीं,

बस मेरी परछाईं होगी।हाँ,
भीड़ के बीच खड़े होकर भी

अक्सर एक शून्य-सा घेर लेता है,
जैसे भीतर कोई स्वर
अनसुना रह गया हो।

पर फिर भी–
हर रात जब
आईने से संवाद होता है,

तो कोई अपराधबोध
मेरी आँखों में नहीं उतरता।
कहती है 'वीणा '–

मैं अकेली सही,
पर अधूरी नहीं–
क्योंकि मैंने

सत्य को ओढ़ा है,
और स्वाभिमान को
अपना एकमात्र आभूषण बनाया है।

वीणा वैष्णव रागिनी
राजसमंद

भोले में है विश्वास'

धरा पर कोई भी हमको,
भोले-सा भोला नहीं लगे,
भरा है प्यार का इक झोला,
हमें ये खाली नहीं लगे।
धरा पर कोई ....
कोई इच्छा लेकर आए,
भोले के इस आंगन में,
उसे तो मालूम है इतना,
भोले आएंगे सावन में।
धरा पर कोई ....
मन के किसी भी कोने में,
भक्ति के सुर तुम गढ़ लेना,
भोले जब भी आएं यहां,
तुम सुर में बस गा देना।
धरा पर कोई ....
भोले से बांधोगे आस,
नहीं कभी होंगे निराश,
शब्द भोले में है विश्वास,
धरा स्वर्ग-सी होगी आज।
धरा पर कोई ....
आओ भोले-सा भोलापन,
किसी के बचपन में ढूंढ़े हम,
पास आ जाएं जब भोले,
मन भर कर मुस्कालें हम।
धरा पर कोई ...
((261/319 वां मनका)

कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी राम सी स्पेशल, गांधीनगर,इन्दौर

कितना कोमल-सा भ्रम

कितना कोमल-सा भ्रम है
आपके जाने के बाद
कोई अपने जेहन में रखेगा,
प्रकृति तो चुपचाप
नियम लिखती ।
सांझ की ठंडी, नम हवा
जब दिन भर का सारा शोर
धीरे-धीरे अपने आँचल में समा लेती है,
तब परछाईं भी
बिना कुछ कहे
कदम-कदम पीछे
विलीन हो जाती ।
कोई अकेला तारा
रात की गहराई में
क्षण भर चमकता
और फिर चुप्पी की तहों में
धीरे से खो जाता।
वैसे ही जीवन
किसी की साँसों का
कोई ऋण नहीं रखता
तुम्हारे जाने के बाद भी

सब कुछ वैसा ही रहेगा।
सूरज उसी ममता से उगेगा,
चिड़ियाँ उसी सहजता से गाएँगी,
बस कहीं भीतर
एक हल्का-सा खालीपन
शब्दहीन होकर उगेगा।
एक कोना
तुम्हारा नाम
हवा में बहुत धीमे-धीमे बुदबुदायेगा
लोग आएँगे,
तुम्हारा अक्स
अपनी भीगी आँखों में छूएँगे,
फिर बिना शोर किए
अपने-अपने रास्तों पर लौट जाएँगे।
जैसे फूल
चुपचाप सूख जाते ,

जैसे बारिश
बिना आहट थम जाती ।
सुनो
यदि तुम्हारे छोटे-छोटे कर्मों में
थोड़ी-सी करुणा रही होगी,
एक सच्चाई की गरमाहट,
एक प्रेम की कोमल छुअन
तो तुम्हारे न होने में भी
एक मृदुल उजास बचेगा।
जैसे कोई दीपक
रात की चादर पर
धीरे-धीरे अपनी रोशनी रख देता
फिर किसी शांत दिन
तुम्हारी पुण्यतिथि पर
बिखरी पंखुडियाँ रखा जाएगा।
एक निस्संग-सी प्रार्थना होगी,
और एक याद
बहुत कोमल, बहुत धीमी
हम सबके भीतर उगेगी,
जैसे चाँदनी
अंधकार में

धीरे धीरे बहती ।

संजीव ठाकुर, रायपुर, छत्तीसगढ़,
9009 415 415,

दो पथिक कहाँ से आए

पहली सखी :---
सखी दोउ पथिक कहाँ से आए ।
कोमल बदन नयन रतनारे ,
अगणित मदन लजाए ।
सखी दोउ पथिक कहाँ से आए ।।
श्यामल गौर किशोर मनोहर ,
चारु चंद्र मुख भाए ।
सखी दोउ पथिक कहाँ से आए ।।
जटा मुकुट मुनी बसन सुहावन ,
सुमुखी संग सिधाए ।
सखी दोउ पथिक कहाँ से आए ।।
दूसरी सखी :---
सुनु सखि ये दोउ अवध कुमार ,
राम और लखन कहाए ।
सखी दोउ पथिक अवध से आए ।।
पठए पिता अगम एहि बन में ,
बचन निभावन आए ।
सखी दोउ पथिक अवध से आए ।।
पहली सखी :---
कहु सखि कैसो मातु पिता वो ,
दुस्सह बनहिं पठाए ।
सखी जो पथिक अवध से आए ।।
दूसरी सखी :---
राजा किन्हीं नीकि सखी री ,
हमरेहिं भाग बन आए ।
सखी दोउ पथिक अवध से आए ।।
देखहु भरि भरि नैन सखी री ,
फिर नहिं अवसर आए ।
सखी दोउ पथिक अवध से आए ।।

ब्रहोश्वर नाथ मिश्र आरा, भोजपुर, बिहार

युद्ध

युद्ध विध्वंस,
बिखर गया सब
उड़ा दी नींद।

गोलियाँ सहे,
आसमान जरिया
होते धमाके।

गया अमन
उजड़ा है चमन
सब वीरान।

आँखों में खौफ,
आवाजें हैं
डराती
बेचैन मन।

चीख-पुकार,
विलुप्त भूख-प्यास

बेबस मनु।

टूटी दीवारें,
तबाही ही तबाही
कैसा मंजर ?

लहू-लुहान,
हृदय-विदारक
विक्षत शव।

मानव बना,
मानव का दुश्मन
विध्वंसक क्यों ?

दया-करुणा,
दुनिया से लुप्त
प्रेम है कहाँ ?

शीला बड़ोदिया, इंदौर

भोर

दुःख दर्द की गठरी
सिर पे लादी
बोझ बहुत
कहां जाऊं??
पता ठिकाना नहीं
कहां जाऊं??
लिए थे सपने आंख में
और सौगात कयी
वक्त की ये परीक्षा
कैसी???
बदल गये सब
अपने ही!
दुःख कयी
सोचू चलती रहुं
कभी तो होगी
भोर कहीं
और सुख की बदली

बौछार लायेगी कभी
होंगे सच्चे सपने कभी
और होगा उजाला कभी
चहुं ओर से फिर से
कभी
आयेगी सुख की
बदली ।
और छंटेगी कभी
दुःख की बदली ।।।।

शीतल अनारे झाबुआ म प्र

नया जीवन

धरती से जब
एक फूल
उपजता है
नया जीवन
साँस लेने लगता है

कोयल जब
गीत गाती है
माधुर्य नया
अवतार लेता है
एक वृक्ष जब
आकाश छूने लगता है

दुनिया नयी ऊंचाई
पाती है
एक गौरैय्या जब
बाज को
घायल कर देती है

नयी वीरता का
जन्म होता है
राजसिंहासन पर जब
अहिंसा बैठ जाती है
सारी क्रूरताएं पाताल
चली जाती हैं

-दुर्गाप्रसाद झाला

दूर का चाँद

हर रोज ये चाँद
गगन से उतरकर
मेरी मुंडेर पर आकर
पर्दों में उलझ जाता है।
वो आता है संदेश लिए
किसी के उस विशेष का,
जिसे छूकर लौटा है अभी,
और उस छुवन की सिहरन
उढ़ेल देना चाहता है
हर देह, हर काया पर।
फिर मुस्कुरा उठता है
वो तन्हा सा चाँद,
पूर्ण गगन के बीचों-बीच।
यूँ ही हर रात वोकिसी एक
प्रियतम की छुवनदूसरे प्रिय
के हृदय तक
चुपके से पहुँचा देता है।
चाँद, तू अकेला कहाँ

तू तो अनगिन धड़कनों का
मौन साक्षी है,
और हम
दूर खिड़की के उस पार
तुझे निहारते रहते हैं।
यहाँ तक की तेरे बिना
एक पल जीना मुश्किल है
और अमावस में भी
तेरी राह तकते रहते हैं

सविता सिंह मीरा जमशेदपुर

देख संदेशा क्या लाई है

ऊपर से जो उतरी हुस्न परी है
जीने का सहारा लेकर आई है
क्या है नारी क्या है नर
किस रूप में तुझे जीना है
सब कुछ नहीं चलता है मर्जी से
देख ऊपर वाले से संसार चलता है
जी ले कब तक जीना है
मर कर तो ऊपर जाना है
देख लेना हुस्न परी को
संदेश किसका लाति है
आज सबके संग जीना है
कल अकेले जाना है

बहादुर अली इंदौर

'जागो! विश्व जनमत जागो

लातों के भूत बातों से नहीं मानते
वे सिर्फ ताकत की भाषा ही पहचानते
स्कूलों को कब्र बनाकर
पुलों को उड़ाकर
रोजाना धमकाकर
समझते हैं
दुनिया सिर्फ उन्हीं के बाप- दादों की है
पर बात यहाँ बहादुरी
और मजबूत इरादों की है
त्याग, बलिदान और सच्चाओं की है
बच्चियों, लड़कियों और विधवाओं की है
जागो! विश्व जनमत जागो!!
एक - एक व्यक्ति खड़ा हो जाये
जिन्दा मिसाईल बनकर
जैसे खड़े हुए थे लाखों
सात अप्रैल को
अब वक्त नहीं है
घर बैठ तमाशा देखने का
कल तुम्हारे घरों को भी
दबोच लेंगी बम, मिसाईलें
उससे पहले निकल पड़ो
सत्य का सूरज बनकर
और जलादो उन मन्सूबों को
जो सिर्फ अपना विस्तार चाहते हैं
मानवता नहीं
सारी दुनिया पर अपना
अधिकार चाहते हैं।

कुमार दुष्यन्त राम टेकरी, मन्दसौर मध्यप्रदेश

ग़ज़ल

पता अपना बताना भूल गए।
हमें रस्ता दिखाना भूल गए।

किसी के साथ थोड़ी दूर जाकर,
हमारे साथ आना भूल गए।

हमारे सामने होकर गए पर,
नजर हमसे मिलाना भूल गए।

जताए तो बहुत रिश्ते पुराने,
मगर उनको निभाना भूल गए।

कठिन हैं राह सारी इश्क़ वाली,
कई इन पर ठिकाना भूल गए।

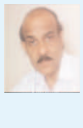

भिगोया तन भरी बरसात लेकिन
लगी दिल की बुझाना भूल गए।

नवीन माथुर पंचोली

मैं आंखें मूंद लिया...

दुनिया एक मेला
मेला एक भीड़
भीड़ में खड़ा होना
भीड़ के साथ चलना
और...,
भीड़ के अंदर खो जाना...!

भीड़भाड़ भीड़ के अंदर
किसी दिन चुपचाप
प्रवेश किया था मैं...,

और खो गया था
भीड़ के अंदर
भीड़ बनकर...!

बरसों के बाद
ढूंढ कर देखा
स्वयं के भीतर
स्वयं को...,

और..., पाया
सर्वथा निस्सार
सार रहित, अर्थहीन, बेकार

था तो केवल
एक ओम...!
एक मंत्र...!!
और एक शून्यता...!!!

मैं आंखें मूंद
लिया...!

मनोज शाह मानस, नारायणा गांव नई दिल्ली .7982510985

ग़ज़ल

गरीबी में कहाँ है साथ देता,
रहा जो साथ में साया हमारा।
हमारे हीं लिए लाया मुसीबत,
वही जो मुफ्त में खाया हमारा।
हमें हीं अब नसीहत दे रहा है,
सभी के सामने जाया हमारा।
दिवारें चंद दिनों तक रहेंगी,
दरक अब जो गया पाया हमारा।
मुझे दुश्मन चुनौती दे गया है,
सबल जब है नहीं काया हमारा।
पसीने में नहाये आदमी ने,
कहा लौटा विटप छाया हमारा।

हरिहर राय ' चौहान' खड़गाग्गार, टेल्को, जमशेदपुर - 4.

गीत

मोहन ले चल नदिया पार।
पाए जीवन का अब सार।।
साथ तेरा सुंदर पाकर।
जीवन बंदावन सा भाए।।
गुमसुम वीराने जीवन में।
सुगंध बहार फिर छाजाए।।
पाऊं तेरा प्रेम अपार....
मन में फूलों का डेरा हो।
तेरी बाहों का घेरा हो।।
मनोहर प्यारे जीवन में।
प्रेन अनुपम तेरा मेरा हो।।
न आपस में भेद तकरार....
होठों तेरा पर नाम हो।
तेरा इस मन में मुकाम हो।।
न आनंद की कभी शाम हो।
जीवन अपना ब्रजधाम हो।।
बज उठे मन के मधुर तार....
तुझे छूकर चंदन हो जाऊं।
मैं मोहक निधिवन हो जाऊं।।
अपने मन में तुझे बसाऊं।
तुझ में ही लय हो जाऊं।।।
मीत सुन मेरी एक पुकार.....
तेरी झील सी आंखो में।
रूप अपना हरदम देखू में।।
स्पर्श पाकर मनहर तुम्हारा।
मन मन में हर्षित होऊं मैं।।
सुंदर पाकर नेह संसार.....
निश्छल होगा प्रेम हमारा।
एक दूजे में विलय हमारा।।

अवनी अंबर सूरज तारा।
देखेंगे अदभुत प्रेम हमारा।।
मिले सागर संग सरिता धार.....

मनोहर सिंह चौहान मधुकर

प्रेम

प्रिय जो ईश्वर का स्वरूप ,
जहाँ समस्त जगत
अपनी पूर्णता के साथ
समाया हुआ है अलौकिक ।
केवल यह एक भावना नहीं,
अपितु आत्मा की सर्वोच्च अनुभूति है ।
जहाँ अहम और अहंकार
सब शांत हो जाते हैं।
प्रेम भेद नहीं करता–
राजा-रंक, उच्च-नीच,
न छोटा-बड़ा का;महज हृदय की
गहराई से पहचानता है।
प्रेम में बंधन नहीं समय , तिथि, वार का,
यह तो हर क्षण में स्वयं को पूर्ण रूप से
करके जीता है दो रूहों में ।
प्रेम पल्लवित वहीं होता है,
जहाँ दिव्य और पवित्र भावनाएँ
निस्वार्थ होकर
एक-दूसरे के हृदय में
हिलोरे लेती हुई
उमड़ पड़ती है एकाएक,
बिना किसी द्वंद,
बिना किसी शर्त के
उन भावनाओं को
अपने अस्तित्व में समाहित
करके प्रमाणित करने हेतु ।
वहीं प्रेम अपने सच्चे रूप में
प्रकट होता है–
जहाँ 'मैं' और 'तुम' का भेद
त्याज्य होकर अस्तित्व में
केवल 'हम' रह जाता है ।

मरुधर जोधा, राजस्व विभाग

रह गई जिंदगी

एक कमरे में सिमटकर , रह गई जिंदगी ।
पंखुड़ियों जैसी बिखरकर , रह गई जिंदगी ।
मालूम है हमें , डूबना है मंझधार में -
भंवर में फ़िर भी उलझकर , रह गई जिंदगी ।
पत्थर के घरों में , शीशे तो टूटना है -
हाथ में किरच - सी गुचकर , रह गई जिंदगी ।
रतजगों को अब कभी , नींद नहीं आनी है -
तानों की शय्या बनकर , रह गई जिंदगी ।
रिस - रिसकर आज जख्म , नासूर बन गए -
नमक से जख्म कुरेदकर , रह गई जिंदगी ।
कनस्तर की तरह रीता , पेट है हमारा -
आंतों सरीखी सिकुड़कर , रह गई जिंदगी ।
दीवारें , दीवारों के , भरती रहीं कान -
गारे के घर - सी ढहकर , रह गई जिंदगी ।

अशोक आनन मक्सी

आलम-ए-जुदाई

हर मर्ज के मुवाफ़िक़ अदा जानती है।
कहाँ असर करना है, दवा जानती है।।
कायनात बनाती है मौसम पुर-असर।
उसके आने की आहट ये फ़िज़ा जानती है।।
कभी कभी उस सम्त इकरार भी होता है।
इस नाजुक दिल की वो रजा जानती है।।
सितारे सो गए लेकिन मेरी आँखें नहीं सोई।
कहाँ रात भर रोने का सबब सबा जानती है।।
हर एक साँस पे अब तो यूँ फँसती हैं साँसें।
आलम-ए-जुदाई की ये सजा जानती है।।
दिखाता है आईना सबको 'अक्स' अपना।
मगर क्या छुपा रखना है, हया जानती है।।

नितिन पुरोहित अक्स उज्जैन

सिंह बकरी में मेल

राजनीति में चल रहा, देखो कैसा खेल
कुर्सी देख आज हुआ, सिंह बकरी में मेल
नेता छोड़े है नहीं, कुर्सी का ये छोर
जब तक कुर्सी साथ है, चलता उसका जोर
सांसद पहलवान बने, अखाड़ा है संसद
धक्का-मुक्की अब चले, करते है आनन्द
चुनाव आते ही करें, खूब ही काँव-काँव
सारे नेता जायगे, अब तो देखो गाँव
चलता कुर्सी वास्ते, नेता नित ही दाँव
छीने है सदा उससे, जिसके ढ़ीले पाँव
नेता दिखलाता सदा, देखो अपनी शान
राजनीति में ये बनी, उसकी ही पहचान
नेता आपस में यहाँ, दुहराते इतिहास
आगे रहकर खुद करें, अपना ही उपहास
चमचा नेता का बना, सबसे अच्छा मीत
गाता है दिन रात ही, बस उसके ही गीत
मटरगश्ती जो करता, उसे मिले सम्मान
रखें नहीं वो देश का, रमेश कभी न मान
समझे अपने आप को, सदैव ही वे वीर
भारती की कर न सके, दूर सभी ही पीर

रमेश मनोहरा शीतला माता गली जावरा

'तुम्हें क्या चाहिए'

थोड़ी सी जो चाहिए हो किसी को,
हथेली पे जिंदगी लिए फिरता हूं मैं।
बिखरे पड़े हैं तेरी बस्ती के सामां बहुत,
जुटाने का हुनर साथ लिए फिरता हूं मैं।
अश्क को भी चाहिए गिरने की कोई तो वजह,
चटकते प्यालों में बेवफाई लिए फिरता हूं मैं।
यूं तो बहुत हैं फरेबी फिक्रमंद इस बाजार में,
तेरे दर पे अपनी औकात लिए फिरता हूं मैं।
अगर फेंकना हो किसी शख्स को नफरतें 'अतुल',
साथ मोहब्बत का मर्तबान लिए फिरता हूं मैं।
अधूरी ग़ज़ल लिखकर क्या सोच रहा है ए शायर,
देख टूटे दिलों के लिए नए हुरूफ़ लिए फिरता हूं मैं।।

अतुल कुमार खरे, वसंत विहार, नई दिल्ली-110057, 9560404367

अलविदा सुरों की मलिका - आशा ताई

रात की खामोशी में चाँदनी मुस्कुराती है,
कहीं दूर से उनकी आवाज़ चली आती है।

कभी ०पिया तू अब तो आजा...० की धुन,
ये दिल को मचलाने लगती %गीत% को सुन।

कभी ०दम मारो दम० की ज़बरदस्त मस्ती,
रूह में रंग भर जाती है आशा ताई हस्ती।

हर युग, हर दौर में उनका जादू हैं कायम,
सदियों गूंजेगा ये सुर हर पीढ़ी को नायब।

जो उन्होंने हमें दिया है गज़ल या हो ठुमरी,
देखी फिल्मी गीतों की रंग-रंगीली झुमरी।

मधुर स्वर की छाया हर दिल को छू जाती,
संगीत की रंगीन दुनिया में सबको रमाती।

आशाजी ने लिखा है संगीत में अपना नाम,
कोई जब गीत बजे दिल को रख लेते थाम।

उनकी मीठी तान सुन के हर दर्द खो जाता,
आज आँखें नम हमारी तोड़ गई जैसे नाता।

संजय एम तराणेकर, इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)